❑लोक-काव्य

ढोला-मारू रा दूहा

पाठ परिचै

'ढोला-मारू रा दूहा' राजस्थानी रौ अेक लोक प्रसिद्ध जूनौ गाथा-काव्य है। आ 'गाथा' दूहां में रच्योड़ी अेक अैड़ी प्रेमगाथा है जिकी राजस्थान ई नीं, इणरी सींवां वाळा प्रांतां में ई घणी लोकचावी रैयी है। इणरी लोकप्रियता रौ प्रमाण औ है कै इणरौ कोई न कोई दूहौ थेट गांव में रैवणियौ अणपढ आदमी भी आपरी जबान माथै राखै। इण बाबत औ दूहौ इणरी साख भरै—

सोरठियौ दूहौ भलौ, भल मरवण री बात।
जोबन छाई धण भली, तारां छाई रात।।

'ढोला-मारू रा दूहा' प्रेमगाथा होवतां थकां ई इणरौ सिणगार वरणाव घणी मरजादा सूं रच्योड़ौ है। राजस्थानी भाव अर भावना सूं इणरी आत्मा सराबोर है। साहित्यकारां री दीठ मांय इणरौ काव्य-सौष्ठव सांगोपांग है। औ अेक गाथा-काव्य है।

'ढोला-मारू रा दूहा' रौ रचयिता कुण हौ अर इणरी रचना कद होयी, इण सारू विद्वानां रा न्यारा-न्यारा मत है। कीं विद्वानां री दीठ सूं आ 'गाथा' किणी खास कवि री कृति नीं होयनै मौखिक परंपरा रै जूनै काव्य जुग री अेक खास काव्य-कृति है, तौ कीं इणनै कवि 'कल्लोल' री काव्यकृति मानै। कीं विद्वान जैनकवि कुसळलाभ नैं इणरौ रचयिता मानै। पण आं धारणावां रा कोई पुख्ता प्रमाण नीं मिळै। इण खातर इणरै विसै में डॉ. माताप्रसाद रौ औ विचार लय पड़तौ लागै कै 'ढोला-मारू रा दूहा' रौ सिरजण-काळ अर उणरौ सिरजक अग्यात ई है। विद्वानां री मानता है कै असली काव्य सरुआत में सगळौ ई दूहां में हौ, पण समै रै साथै लोग दूहा भूलता गया अर इणी बिचै कीं दूहा बचग्या, ज्यांरौ कथासूत्र अेकदम विडरूप होयग्यौ। इण कथासूत्र नैं मिळावण खातर जैनकवि कुसळलाभ वि. सं. 1618 रै लगैटगै चौपाइयां बणाई अर दूहां रै बिचै जोड़-जोड़नै कथासूत्र नैं संवारियौ। औ काम जैसलमेर रै रावळ हरराज रै समै होयौ। की विद्वान 'ढोला-मारू रा दूहा' रौ बगत संवत 1000 रै लगैटगै बतावतां कुसळलाभ अर रावळ हरराज रै समै नैं कूंतता थका इण रचना रौ सिरजण काळ वि. सं. 1450 सूं पैली मानै।

कथा-सार

देस-काळ रै किणी टैम पूगळ में पिंगळ अर नरवर में नळ नाव रा राजा राज करता हा। समै रै संजोग सूं पूगळ देस में अेक बार काळ पड़ग्यौ। राजा पिंगळ परिवार समेत राजा नल सूं पुष्कर में मिल्या। राजा पिंगळ रै मारवणी नांव री अेक कन्या ही अर नळ रै ढोला उर्फ साल्हकुंवर नांव रौ राजकुमार हौ। उण टैम ढोला नैं देखनै राजा पिंगळ री राणी इण माथै रीझगी ही अर राजा माथै जोर देयनै आपरी कन्या मारवणी रौ ब्याव उणरै सागै कराय दियौ। उण बगत ढोलौ तीन अर मारवणी फगत डोढ बरस री ही। टाबर होवण रै कारण राजा पिंगळ आपरी लाडल मारवणी नैं नरवर नीं राखनै पाछा आवतै समै पूगळ लेय आया।

...यूं करतां-करतां केई बरस बीतग्या। बठीनै राजा नळ पूगळ नैं घणौ अळगौ अर उणरौ मारग अबखौ समझनै ढोला रौ दूजौ ब्यांव माळवै री राजकुमारी माळवणी रै साथै कर दियौ। इणसूं पैली होयोड़ै ब्यांव री बात नैं वै ढोला नैं नीं बताई। ब्यांव होयां ढोलौ अर माळवणी प्रेम रै सागै राजसी ठाठ-बाट अर आंणद सूं रैवण लाग्या।

उठीनै पूगळ में मारवणी बड़ी होयी। अेक दिन सपना में उणनैं ढोलो दिखै। ढोला रै रूप-रंग नैं देखनै उण रै मन में प्रेमभाव जागै तद उणरी साथण रै मारफत उणरी मां बतावै कै जकौ उणरै सपना में आयौ है वौ तौ उणरौ सायबौ है। आ बात सुणनै मारवणी ढोला रै विरह में कुदरत रै सागै अेकमेक होयनै संताप करै। पूगळ रा राजा ढोला तांई संदेसा भेजै, पण मालवणी री चतुराई रै कारण वै ढोला तक नीं पूग सकै। छैकड़ अेक ढाढी रै साम्हीं मारवणी आपरी प्रेम भावनावां नैं उजागर करै जिणनैं ढाढी काव्य रूप में मांड ढोला तांई पुगावै।

ढाढी मारवणी रौ संदेस लेयनै गुप्ताऊ रूप सूं नरवर पूगै अर आपरै गावणै-बजावणै री कळा रै बळबूतै आपरी समझदारी सूं वौ ढोला तांई उण संदेस नैं पूगाय देवै। ढाढी रै मारफत मारवणी री सुंदरता, प्रेम अर समरपण भाव री जाणकारी मिल्यां पछै ढोलौ खुद उण सूं मिळण री सबळी आफळ करै पण सोरै सांस पार नीं पड़ै। ढोलौ कीं दिनां पछै माळवणी री विणती नैं अजाणी कर ऊंट माथै सवार होयनै पूंगळ देस पूगै। जठै राजा पिंगळ ढोला नैं बधावै, जोरदार मान-मनवार करै। राजकुमारी मारवणी मोद मनावै अर उणरी साथणियां मंगळ गावै। कीं समैं रै पछै ढोलौ अर मारवणी राजा पिंगळ सूं सीख लेयनै नरवर पूगै। इण बिचाळै केई अंतर्कथावां ई आवै, जिणमें मारवणी नैं पीवणौ सांप खावणौ, अेक जोगी रै प्रताप सूं पाछी जीवती होवणौ, ऊमरा-सूमरा री सेना सूं मुकाबलौ करणौ अर कुदरत री विपदावां भेळी है।

इण पाठ में मारवणी ढाढी नैं आपरै मन री बात बतावती थकी समझावै कै वा ढोला रै प्रेम में किण भांत रमियोड़ी है अर उणनैं ढोला तांई कांई संदेस पूगावणौ है, इण भाव सूं ओत प्रोत दूहा लिरीज्या है। अै दूहा काव्य-कला री दीठ सूं बेजोड़, भासा री दीठ सूं सहज है, जिका प्रेम, विरह अर कुदरती फूठरापै री साख नैं सवाई करै।

ढोला-मारू रा दूहा

सोरठौ

जेती जउ मनमांहि, पंजर जइ तेती पुळइ।
मनि वइराग न थाइ, वालंभ वीछड़ियां तणी।।

दूहा

फूलां फळां निघट्टियां, मेहां धर पड़ियांह।
परदेसां का सज्जणा, पत्तीजूं मिळियांह।।
सालूरा पांणी विना, रहइ विलक्खा जेम।
ढाढी, साहिब सूं कहइ, मो मन तो विण एम।।
पावस मास विदेस प्रिय, घरि तरुणी कुळसुध्ध।
सारंग सिखर, निसद्द करि, मरइ स कोमळ मुध्ध।।
तुंही ज सज्जण मित्त तूं, प्रीतम तू परिवांण।
हियड़इ भीतरि तूं वसइ, भावइं जांण म जांण।।
हूं बळिहारी सज्जणां, लज्जणां मो बळिहार।
हूं सज्जण पग पानही, सज्जण मो गळहार।।
लोभी ठाकुर आवि घरि, कांई करइ विदेसि।
दिन दिन जोवण तन खिसइ, लाभ किसाकउ लेसि।।
बहु धंधाळ आव घरि, कासूं करइ विदेस।
संपत सघळी संपजे, आ दिन कदी लहेस।।

अवसर जे नहि आविया, वेळा जे न पहुत्त।
सज्जण तिण संदेसड़इ, करिज्यउ राज बहुत्त।।

सोरठौ

संभारियां संताप, वीसारियां न वीसरइ।
काळेजा बिचि काप, परहर तूं फाटइ नहीं।।

दूहा

यहु तन जारी मसि करूं, धूंआ जाहि सरग्गि।
मुझ प्रिय बद्दळ होइ करि, वरसि बुझावइ अग्गि।।
भरइ, पळट्टइ भी भरइ, भी भरि भी पळटेहि।
ढाढी हाथ संदेसड़ा, धण विललंति देहि।।
दूहा संदेसा मिसइं, दीधा तिणां सिखाइ।
प्रीतम आगळि वीनती, करिया इण विधि जाइ।।

ढाढियां रौ नरवर जावणौ

स्रवण संदेसा सांभळे, ढाढी किया प्रयांण।
मागरवाळ जु आविया, देसे साल्ह सुजांण।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

पंजर=पिंजरा (अस्थिपंजर)। आगळी=आगै वाळी। वइराग=वैराग, विरक्ति। सांभळे=सुणणौ, सांभळणौ। वालंभ=बालम, प्रियतम। प्रयाण=प्रस्थान। पत्तीजूं=भरोसौ करूं, पतीजणौ। मागरवाळ=याचक। साल्ह=साल्हकंवर (ढोला रौ नांव)। सालूरा=मेंडक, डेडरिया। सुजाण=स्याणौ–समझणौ, चतुर। जेम=जियां, जिसौ। एम–इयां, इसौ। पावस=बिरखा री रुत, चौमासौ। सारंग=मोर। मरइ=म्रित्यु, मौत। परिवाण=प्रमाण। वसइ=वासौ करै, रैवै। धंधाळू=धंधा वाळौ। संभारियां=याद करणौ। परहर=छोडणौ, छिटकावणौ। पळट्टइ=पलटै, बदळै। विललंती=विळाप करती, बिलखती।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. ढोला रा पिता कठै रा राजा हा?

(अ) पूंगळ देस (ब) नळ देस
(स) धूंधळ देस (द) जळ देस

( )

2. मारवणी रै पिता रौ नांव कांई हौ?

(अ) राज पिंगळ (ब) राजा नरवर
(स) राज गजराज (द) राजा साल्ह

( )

3. ढोला रौ असली नांव कांई बतायौ जावै ?

(अ) साल्ह कुंवर (ब) समदर कुंवर

(स) सगत कुंवर (द) रूपल कुंवर

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजा पिंगळ किण देस रौ राजा हौ ?
2. ढोला री धण मारवणी किण देस री राजकुमारी ही ?
3. 'विललंती' सबद रौ कांई अरथ हुवै ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. मारवणी किणसूं प्रेम करै ?
2. मारवणी रौ संदेस ढोला तांई कुण पूगावै ?
3. ढोला–मारू री कथा कांई है ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. ढोला–मारू री कथा रौ सार लिखौ।
2. मारवणी रै विरह भाव नैं उजागर करौ।
3. मारवणी ढाढी सागै ढोला नैं कांई संदेस भेजै ?

नीचै दिरीज्या दूहां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. फूलां फळां निघट्टियां, मेहां धर पड़ियांह।
   परदेसां का सज्जणा, पत्तीजूं मिळियांह।।

2. पावस मास विदेस प्रिय, घरि तरुणी कुळसुध्ध।
   सारंग सिखर, निसद्द करि, मरइ स कोमळ मुध्ध।।

3. अवसर जे नहि आविया, वेळा जे न पहुत्त।
   सज्जण तिण संदेसड़इ, करिज्यउ राज बहुत्त।।

4. स्रवण संदेसा सांभळे, ढाढी किया प्रयांण।
   मागरवाळ जु आविया, देसे साल्ह सुजांण।।